सारथी

फ्लैट नं॰ 4, शंकर मार्किट, नई दिल्ली - 110001

दिनांक : 3.8.95

प्रिय साथियो,

सारथी की शुरुआत के साथ ही जुड़ा हुआ है हर वर्ष 14 अगस्त को हम सबका मिलना और स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या में आज़ादी का जश्न मनाना। यह एक राष्ट्रीय पर्व है जिसे हम सब को मिलकर मनाना हम कलाकारों को एक भावनात्मक बन्धन में बांधता है। एक ऐसी सोच में बांधता है जिसमें हमारा ओर देश का भविष्य जुड़ा है। इस वर्ष का हमारा विषय है,

बचपन ओर आज़ादी

आज के दिन हर साल हम कुछ प्रतिज्ञा लेते हैं। आज के दिन की हमारी प्रतिज्ञा है "बचपन को आजादी के तराजू में तौलने की।" हर कलाकार बन्धु यह जानते हैं कि उनकी कला उनके बच्चों में जीवित रहती है। इसी का नाम विरासत है। इस विरासत को भविष्य देते हैं हमारे बच्चे।

इस सम्बन्ध में कई सवाल अहम् हैं, जिन्हें ज़िन्दगी की भागदौड़ में हम हाशिये पर रख देते हैं। इन सवालों का सामना हमें करना ही होगा। क्या हैं आज़ादी के माईने? क्या हमारे बच्चे वास्तव में आज़ाद हैं? क्या उन्हें शिक्षा पाने की आज़ादी है? अज्ञानता के अंधेरे में कहीं वो कैद तो नहीं? क्या हमने उनके नन्हें कंधो पर परिवार का जुआ रख कर उन्हें गुलाम तो नहीं बना रखा? क्या हमारे बच्चे अपनी कलात्मक विरासत और पढ़ाई का गंगा जमना संगत कभी कर पायेंगे? क्या हमारे बच्चे आज़ाद हैं, बच्चे बने रहने को? क्या हमारे बच्चे अपनी कलात्मक विरासत को समझते हैं? क्या वे इस विरासत पर शर्मिन्दा हैं? हमने उन्हें इस योग्य बनाया है कि वह अपनी पैतृक विरासत को आगे ले जा सके? उनका भविष्य अब से बेहतर होगा या बदतर?

एक अहम सवाल हैं "आज़ादी आखिर क्या है?" क्या आज़ादी का अर्थ झण्डा फहराना है? नहीं बिल्कुल नहीं। आज़ादी के माईने हैं - विकास की आज़ादी, कल्पना करने की आज़ादी, रोज़ी-रोटी से हट कर कुछ करने की आज़ादी। आईये हम सब आज मिलकर यही संकल्प ले कि हम अपने को और अपने बच्चों को जहालत और ज़लालत से मुक्त करेंगे। हम अपने वर्तमान की धरती को इतना उपजाऊ बनाएंगे कि उसमें हमारे आने वाले कल के सजीले सपनों की फसल होगी। ऐसा सुन्दर भविष्य हमारे बच्चों को हम देंगे। यह संभव है, क्योंकि कलाकार के हुनर में संस्कृति और इतिहास बनाने की ताकत है। कलाकार समाज का वह आईना है जिसमें भूत, भविष्य और वर्तमान सभी की तस्वीर होती है। कलाकार जीवन और प्रकृति के बीच का पुल बनाता है। जीवन को नये अर्थ देता है।

समय की मांग है सारथी का हर परिवार यह महसूस करे कि देश की समृद्धि, में उसकी गहन जिम्मेदारी है क्योंकि दस्तकारी, हाथकरघा और संगीतनृत्य माध्यम से यह देश पर्यटन व्यापार चलाता है। भारत अपने उद्योगों से नहीं अपनी कलाओर संस्कृति के बुते पर विदेशों में जाना जाता है। हम सबको गर्व होना चाहिये कि हम अपने देश के सांस्कृतिक राजदूत हैं। लेकिन इस अहसास के साथ ये ज़िम्मेदारी भी जुडी है कि आने वाली पीढ़ी यानि कि हमारे बच्चे प्रबुद्ध और पढ़े लिखे नागरिक बनें - साथ ही अपनी विरासत को न भूलें - गर्व से कहें हम कलाकार हैं। तभी हम भविष्य में भी अपने अस्तित्व को सुरक्षित और सम्मानित रख सकेंगे।

सारथी का उद्देश्य है, हर कलाकार और कला को समाज में सम्मान मिले। यह तभी संभव होगा जब हर कलाकार सारथी का हिस्सेदार बनें।

पिछले एक वर्ष में सारथी द्वारा किये कुछ मुख्य कार्यों का संक्षिप्त ब्यौरा इस प्रकार है:-

- उड़ीसा सरकार और INTACH के सहयोग से उड़ीसा के बहुमुखी संस्कृति को एक मंच पर लाने की सारथी की कोशिश को काफी सराहा गया।

- विभिन्न शिल्पों की कार्यशालाओं का आयोजन कर उन प्रतिभावान लोगों को जिनमें सृजनता है, को आगे लाने में पूर्णतः सफल रहे।

- आदिवासी क्षेत्र कोरापुट जिले में डेंगर 95 उत्सव एक माह तक चला। जिसमें देश-विदेश के कलाकारें - शिल्पियों ने भिन्न-भिन्न कार्यशालाओं में वहां की कलाओं के साथ अपने हुनर का आदान-प्रदान किया, साथही आदिवासीयों को डेंगर एक ऐसा मंच मिला जहां पर वे पहली बार अपनी बात खुलकर रख सके। शीघ्र ही प्रर्दशनी के ज़रिये इन प्रोटोटाइप नमूनों को दिखाया जायेगा।

- उड़ीसा के कलाकारों की आवासीय योजना की रूपरेखा तैयार है

- आप जानते ही हैं कि सारथी के प्रयास से सुप्रीम कोर्ट ने 1985 की हैण्डलूम पालिसी को शुरु कराया था, लेकिन सुप्रीम कोर्ट के आदेश से बुनकरों को काम नहीं मिल सकता। इसी उद्देश्य से सारथी ने देश के हथकरघा बुनकरों की माली हालात में सुधार न होने पर देश भर के स्कूल-कालेज के लड़के/लड़कियों की हथकरघा तथा देसी रंग (नील व आल) से बने अलग-अलग डिज़ाइन के कपड़े बनाने की शरुआत की है। इस योजना में प्रसिद्ध डिज़ाइनर श्रमा ज़ैदी जी सहयोग कर रही हैं, उम्मीद है **"नीलाल"** योजना से हथकरघा बुनकरों को अवश्य लाभ होगा।

- श्री अशोक खोसला जी (विकास-विकल्प) के सहयोग से काफी बुनकरों को काम मिला है तथा आगे और अधिक को काम मिलने की उम्मीद है।

- हर दस्तकार अपनी सृजनशक्ति के अनुकूल हमेशा कुछ न कुछ नया बनाता रहता है, लेकिन उसको निराशा तब होती है जब उसकी कृति का उचित दाम नहीं मिलता अथवा बाजार व्यवस्था के लिए किसी बिचौलिए का सहारा लेना पड़ता है-कलाकार को उचित मेहनताना मिले इसी उद्देश्य से सारथी ने एक्सपोर्ट लाइसेंस ले लिया है, एक्सपोर्ट में आपका सामान भी भेजा जा सकता है। (सारथी में संपर्क करें)

- फ्रांस के थियेटर डे सोलिल (आर्थर मुस्किन) के संयंत्र से पिछले दो सालों से अंकुर स्कालरशिप तथा बरगद फैलोशिप 15 बच्चों तथा, गुरुओं को दी जा रही है।

- कठपुतली कोलोनी शादीपुर जिपो लोक कलाकारों की एक ऐसी बस्ती है, जहां पर विभिन्न विधाओं के कलाकार पिछले 25-30 वर्षों से रह-बस रहे हैं, एक समय में यह बस्ती अपनी विशेष पहचान से देश तथा दुनिया की सुर्खियों पर रही। आज परिस्थितिवस यह बस्ती अपनी पहचान खोती जा रही है। सारथी का पूरा प्रयास है कि यह कलाकार बस्ती अपनी विशेष पहचान बनाये रखे, नई पीढ़ी अपनी परम्परा से जुड़ी विधाओं को न भूलें, इसके लिए भिन्न-भिन्न कलाओं से जुड़े गुरुओं तथा कला पारखियों के साथ कार्यशालाएं आयोजित करने जा रहे हैं। यह कार्यशालाऐं इन विषयों पर होंगी!

- राजस्थानी राग, छन्द, दोहे स्वर/कठपुतली, कार्विंग, रंगाई तथा नचाना/जादू के नई-नई ट्रिकें तथा जादुई किट बनाना जिसे बेचा जा सके, आज की परिस्थिति में कलाकार को देश तथा दुनियां की जानकारी, महिलाओं के साथ पेपरमेशी के खिलौने तथा आम जरुरत के चीजें बनाना जो बिक्री योग्य हो।

- पिछले एक वर्ष से इस बस्ती के कुछ उत्सुक एवं इच्छुक बच्चों के साथ एक कलाकार के दैनिक जीवन की परेशानियाँ एवं कला को नाटक के रुप में दिखाने के लिए कार्यशालाएं चल रही है। इन बच्चों ने अपने नाटक के साथ अन्तराष्ट्रिय थियेटर फेस्टेवल में भी भाग लिया था। साथ ही इन बच्चों को खाली समय में पढ़ाइ लिखाई के साथ साथ पौष्टिक आहार की व्यवस्था भी है।

- कठपुतली कालोनी निवासी एक मदारी (जादूगर) इज़ामुद्दीन अपनी सृजन शक्ति के बल पर 'ग्रेट इन्डियन रोप ट्रिक' रस्सी का खेल फिर से शुरू कर दी जो तकरीबन 600 सालों से रुकी पड़ी थी, यह कला पूरे विश्व के जादूगरों में एक स्रोत का विषय था। इज़ामुद्दीन ने पूरे विश्व में हिन्दुस्तान के साथ-साथ कठपुतली कालोनी का नाम भी ऊँचा किया है, सारथी ने इज़ामुद्दीन के प्रयास को पूरे विश्व में प्रचारित-प्रसारित कर उचित सम्मान दिलाने में मदद की। हमारा उद्देश्य है जब भी कोई कुछ नया करे उस सृजनकर्ता को उसका उचित सम्मान मिले, आप में भी सृजनशक्ति है; कुछ नया करने की ज़रूर सोचें क्योंकि आपकी उपलब्धि पर आपका बच्चा गर्व करता है। उसे भी पढ़ा लिखा कर अपनी विरासत को आगे चलाने का जज्बा जगता है।

- हमारे देश में बाल मजदूरी एक अभिशाप है हर बच्चे का बचपना खेलने तथा पढ़ाई का है। इन दुधमुहों से काम करवाना जघन्य अपराध है। इसी उद्देश्य से सारथी ने मिर्ज़ापुर, कार्पेट उ.प्र. के कालीन बुनकरों का सर्वेक्षण किया तथा नलिनी सिंह जी के निर्देशन में एक फिल्म बनाई, जिसका उद्देश्य लोगों में जागरूकता लाना था कि बच्चों को इस उद्योग से दूर रखें, क्योंकि लाखों परिवारों का पेट भरने वाला यह उद्योग चन्द बच्चों के कारण बन्द न हो। इसी तरह की अन्य फिल्में तथा अन्य प्रचार कार्यक्रमों के माध्यम से जागरूकता पैदा करना हमारा ध्येय है।

- विभिन्न कलाकारों द्वारा हाथ से चित्रित टी-शर्ट का कार्यक्रम जारी है।

- सारथी, कलाकारों के हित एवं सम्मान की रक्षा के लिए देश-विदेश की स्वयंसेवी संस्थाओं, कलाकारों से सपर्क कर रही है, ताकि कलाकार समुदाय को गर्व से जीनेका हक मिले।

आप स्वतंत्रता दिवस उत्सव मनाने 14 अगस्त को कठपुतली कालोनी शादीपुर डिपो की वर्कशाप में सादर आमन्त्रित है। अपने साथ अन्य कलाकार बन्धुओं को भी लाये। यह दिन हमेशा कलाकारों के त्यौहार के रुप में मनाया जायेगा।

सादर!

आपका

(राजीव सेठी)

स्थान: **भूले-बिसरे वर्कशाप, कठपुतली कालोनी, शादीपुर डिपो, दिल्ली - 110008**

कार्यक्रम का समय: **9 बजे प्रातः 14 अगस्त 1995**

सारथी - फ्लैट नं. 4, शंकर मार्किट, नई दिल्ली-110001, दूरभाष : 3315107 - 3323744